मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2016 marumegh
ISSN:2456-2904

मटर की उन्नत उत्पादन तकनीक

[1]सुखदेव सिंह, निशा मीना, हरेराम कुमार, उपेन्द्र कुमार बागड़ी
उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, बीकानेर

फलदार सब्जियों के अन्तर्गत मटर एक महत्वपूर्ण और अधिक लाभ देने वाली फसल है। इसका उपयोग सब्जी एवं दालों दोनों ही रूप में किया जाता है। यह आर्थिक एवं पोष्टिक गुणवत्ता की दुष्टि से महत्वपूर्ण फसल है। मटर में 7.2 ग्राम प्रोटीन तथा 15.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेड प्रति 100 ग्राम खाने योग्य भाग में पाये जाते है। यह विटामिन ए, विटामिन सी तथा फॉस्फोरस, पोटेशियम, मैग्नीशियम आदि लवणों का भी प्रचुर स्त्रोत है।

जलवायु

मटर एक ठंडी जलवायु की फसल है जिसे रबी की फसल के रूप में उगाया जाता है। इसके छोटे पौधों में पाले को सहन करने की क्षमता होती है लेकिन फूल बनने और फलियों के लगने के समय पाला पड़ने से अधिक हानि होने की संभावना रहती है। यदि फलियों के बनने के समय मौसम शुष्क व गर्म हो जाए तो दोनों के गुण और उत्पादन पर प्रतिकुल प्रभाव पड़ता है।

भूमि तथा खेत की तैयारी

अच्छा जल निकास वाली दोमट मिट्टी, जिसका पीएच मान 6.0–7.5 के बीच हो, इसकी खेती के लिए सबसे अच्छी होती है।

बुवाई के लिए खेत को अच्छी तरह से तैयार कर लेना चाहिए। यदि भूमि में पर्याप्त नमी न हो तो पलेवा करके बुवाई करें। पहले खेत की गहरी जुताई करें तथा बाद में हैरो चलाकर खेत को भलि–भांति बुवाई के लिए अनुकूल बनावें।

प्रमुख किस्में

किस्मों का चुनाव करते समय उस किस्म की फसल अवधि, बोने के बाद फलियों की पहली तुड़ाई में लगने वाला समय और पैदावार आदि के संबंध में जानकारी अवश्य कर लेनी चाहिए।

अगेती किस्में

इन किस्मों में फलियां बीज बुवाई के 60 से 65 दिनों में पहली तुड़ाई हेतु तैयार हो जाती है। अगेती किस्मों में शामिल है –

अर्किल	जवाहर मटर – 4	मटर अगेती 6	हरा बौना
मिटियोर	असौंजी	वी.एल. 3	जवाहर मटर 3

मध्य कालीन किस्में

इसमें फलियां बुवाई के 80 से 90 दिनों मे पहली तुड़ाई हेतु तैयार हो जाती है। इसमें शामिल है –

बोनविलै	मधु	आर.पी.–3	अर्का अजित
जवाहर मटर–1	जवाहर मटर–2	यू.एन. 53 (6)	के.एस.–245
ऊटी–1	आजाद पी–1	न्यू लाइन परफेक्शन	जे.पी.–83
आर.पी.बी.–15	आइ.पी.–3	पी.आर.एस.–4	डी.पी.आर.–68

पिछेती किस्में

इनकी फलियाँ 125 से 135 दिनों में सूखकर कटाई के लिए तैयार हो जाती है। पिछेती किस्में सामान्यतः सूखे दानों के लिए उगाई जाती है। इसमें शामिल है –

एन.पी.–29	रचना	स्वर्ण रेखा	पूसा–10	हंस

बीज दर एवं बुवाई

अगेती किस्मों के लिए 100 से 120 कि.ग्रा. बीज/है. तथा मध्यम एवं देर से तैयार होने वाली किस्मों के लिए 80 से 90 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टेयर पर्याप्त होता है। बुवाई अक्टूबर माह से नवम्बर माह तक करनी चाहिए। असौंजी किस्म को सितम्बर माह में बुवाई कर सकते है। पूसा–10 को जनवरी माह में भी बुवाई कर सकते है।

अगेती किस्मों में कतार से कतार की दूरी 30 सेमी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 5–10 सेमी रखनी चाहिए जबकि मध्यकालीन व पछेती किस्मों में कतार से कतार की दूरी 45 सेमी. व पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी. रखनी चाहिए।

बीजोपचार

मटर के बीजों को बुवाई करने से पूर्व उन्हें फफूंदी नाशक दवा जैसे कैप्टान, थायराम आदि से उपचारित करना चाहिए। 2.5 ग्राम दवा से एक किलों बीजों को उपचारित करना चाहिए। फफूंदीनाशक दवा के उपचार के बाद बीजों को जीवाणु कल्चर यानी राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना चाहिए। इसके लिए एक लीटर पानी को भगोने में लेकर गर्म करें और उसमें 100 ग्राम गुड़ डालकर घोल लें। पानी उबल जाने के बाद उसे कमरे के तापमान तक ठंडा कर लें और इसमें तीन पैकेट राइजोबियम कल्चर मिला देवें तथा बीजों को इस घोल में भली–भांति मिला देवें।

उपचारित बीजों को छाया में सुखाने के बाद तुरन्त बो देवें। एक हैक्टेयर के बीजों को उपचारित करने के लिये 1.25 लीटर घोल पर्याप्त होता है।

खाद एवं उर्वरक

खेत की तैयारी के समय 200 से 250 क्विंटल गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर की दर से खेत में मिला देवें तथा जुताई करें। अंतिम जुताई के समय 25 किलों नत्रजन, 40 किलो फॉस्फोरस तथा 50 किलो पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से देवें।

सिंचाई

मटर की फसल को अधिक सिंचाईयों की आवश्यकता नहीं होती है। फूल आने के समय तथा फलियों के बनने के समय सिंचाई अवश्य करनी चहिए।

निराई–गुड़ाई

बुवाई के लगभग एक माह पश्चात् निराई गुड़ाई करना आवश्यक होता है। बेसालिन 2.5 लीटर/हैक्टेयर की दर से बीज बोने से पहले जमीन में देने से भी अधिकतर खरपतवार नष्ट हो जाते है।

फलियों की तुड़ाई एवं पैदावार

मटर की फलियों की तुड़ाई उसकी किस्म और फलियों के उपयोग के ऊपर निर्भर करती है। हरी फलियों की तुड़ाई दानों के कोमल अवस्था में रहने पर ही करें। फलियों की तुड़ाई फसल अवधि के दौरान 4 से 5 बार की जाती है। मटर की हरी फलियों की उपज अगेती किस्मों में 40 से 50 क्विंटल, मध्यम तथा पछेती किस्मों में 80 से 100 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक मिलती है। सूखे दानों की पैदावार 15 से 20 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक मिल जाती है।

प्रमुख कीट

1. **तना मक्खी :** इस कीट का आक्रमण मटर की अगेती फसल पर अधिक होता है। इस कीट की छोटी–छोटी लटें तने में पहुंच कर अन्दर ही अन्दर सुरंग बनाने लगती है। पौधों की पत्तियां पीली पड़ जाती है एवं पौधा मुरझाने लगता है और अंत में मर जाता है।

नियंत्रण : भूमि में फोरेट 10 जी 10–15 किलो अथवा कार्बोफ्युरॉन 3 जी 25 किग्रा प्रति हैक्टेयर के हिसाब से देवें।

2. **पर्ण खनक (लीफ माइनर) :** इस कीट की लटें पत्तियों में सुरंगे बना देती है। सुरंग बनने से पत्तियों की भोजन बनाने की क्षमता कम हो जाती है। अधिक प्रकोप से पत्तियां मुरझाकर सुख जाती है तथा पौधों की वृद्धि रूक जाती है।

नियंत्रण :

- फोरेट 10 जी 10–15 किलो प्रति हैक्टेयर के हिसाब से भूमि में मिलावें।

- मिथाइल डिमेटोन 25 ई सी एक मिलीलीटर प्रति लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें।

3. **फली छेदक :** इसकी लटें फलियों को क्षति पहुंचाती है। अण्डों से निकलने के बाद ये लटें फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानों को खाने लगती हैं। क्षतिग्रस्त फलियों में कुछ दानें आधे कटे हुए और कुछ पूर्णतया नष्ट हुए पाये जाते है।

नियंत्रण :

- कीटग्रस्त फलियों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
- इमिडाक्लोप्रिड 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें या मैलाथियॉन 50 ई सी एक मिलीलीटर प्रति लीटर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

प्रमुख व्याधियां

1. **छाछया :** यह रोग कवक दूरी इरीसाइफी पोलीगोनी द्वारा होता है। इसमें पत्तियों पर सफेद चूर्णी धब्बे दिखाई देते है।
   नियंत्रण : 2 ग्राम घुलनशील गंधक या 1 मिलीलीटर कैराथियॉन एल.सी. या कैलेक्सिन प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यह छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर 2 या 3 बार आवश्यकतानुसार दोहरावें।
2. **रस्ट :** इस रोग के प्रभाव से पत्तियों तथा तनों पर पीले रंग के फफोले पड़ जाते है। पौधे सुख जाते है तथा उपज में कमी हो जाती है।
   नियंत्रण : घुलनशील गंधक 2 ग्राम या ट्राइडेमार्क 0.5 मिली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
3. **बीज एवं जड़ गलन :** इस रोग से या तो बीज सड़ जाते है या बीज उगने के बाद पौधे मर जाते है।
   नियंत्रण : बीजों को बोने से पहले थाइराम या कैप्टान या वैबीस्टीन 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।